भाकृअनुप-वि.प.कृ.अनु.स. प्रसार प्रपत्र (91/2016)

तीन फलों जैसा एक फल : नैक्ट्रिन

कृषि विज्ञान केन्द्र
(भाकृअनुप- विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान)
(आई.एस.ओ. 9001-2008 प्रमाणित संस्थान)
चिन्यालीसौड़-249196, उत्तरकाशी (उत्तराखण्ड)
2016
हैल्पलाइन : 01371-237198
सम्पर्क समय : प्रत्येक कार्य दिवस (प्रातः 10 बजे से सांय 5 बजे तक)

होती उनके फलों को सुखा भी लिया जाता है तथा भारत में उन्हें ही डिब्बा बन्दी के काम में लाते है। निचले इलाके से मध्यम ऊँचाई वाले इलाके तक समान रूप से पनपने के कारण किसानो के लिए आजीविका के लिहाज से यह फल मुनाफे वाला साबित हो सकता है। इसकी खेती पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। जिससे इसको उपर्युक्त स्थानो में इसका व्यावसायिक रूप से विस्तार किया जा सके। व्यापारिक दृष्टि से नैक्ट्रिन की डिब्बा बन्दी बहुत महत्वपूर्ण है परन्तु यह अधिकतर अभी उन व्यापारियो द्वारा ही किया जाता है जिनके पास आधुनिक यंत्र उपलब्ध रहते हैं। नैक्ट्रिन फल प्रसंस्करण के लिए बेहत्तर माना जाता है इससे मुख्य रूप से जैम जैली व जूस तैयार किया जा सकता है। अधिक उत्पादन की स्थिति में इसके खराब होने से बचाने के लिए प्रसंस्करण का विकल्प मौजूद है।

आलेख
डॉ वी. के. सचान, कु. मनीषा, डॉ गौरव पपनै,
श्री जे.पी. गुप्ता एवं श्री हाकिम सिंह चौहान

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र
(भाकृअनुप–विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान)
चिन्यालीसौड़– 249196 उत्तरकाशी (उत्तराखण्ड)

सहयोग
पी.एम.ई.सैल

निदेशक, भाकृअनुप–विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान, अल्मोड़ा–263601 (उत्तराखण्ड) द्वारा संस्थान के लिए प्रकाशित एवं मैसर्स अपना जनमत, 16 ए, सुभाष रोड, देहरादून (उत्तराखण्ड) दूरभाष : 0135–2653420, मो. : 9837209996 द्वारा मुद्रित।

बाद की रेख–रेख करना: घास पात को रोकने के लिए बसंतऋतु में जुताई व गुड़ाई करते रहना चाहिए। जुताई व गुड़ाई करते समय नैक्ट्रिन की जड़ो का ध्यान रखना चाहिए क्योंकि इसकी जड़ें ज्यादा गहराई तक नहीं जाती है। वर्षा में भूमि सुधारने वाली फसलें लगनी चाहिए।जहाँ पर सिंचाई के साधन हो फल लगने से पकने के समय तक सिंचाई करते रहना चाहिए। इससे अच्छे व बड़े फल प्राप्त होते हैं।

अनावश्यक फलों को कम करना: नैक्ट्रिन की पैदावार में अनावश्यक फलों को कम करने का महत्वपूर्ण स्थान है इससे अच्छे रंगदार बड़े फल मिलते है तथा द्विवार्षिक फल आने की प्रवृत्ति भी लगभग समाप्त हो जाती है। इसलिए फल कम करने की क्रिया, नैक्ट्रिन में (अपने आप ही टूट कर गिर जाने वाले फलों के पश्चात तथा फलों के कड़े होने के पूर्व) अप्रैल के अन्त में तथा मई के प्रथम सप्ताह में कर लेना चाहिए। इससे वृक्ष शक्तिशाली एवं लगातार फलने वाले हो जाते हैं। डालियों के टूटने की संभावना कम हो जाती है।

फलों का रख–रखाव: नैक्ट्रिन के फलो में डंठल नहीं होता है। अतः तोड़ते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि फलों में कोई खरोंच न आये व पके फलों को तुरन्त तोड़ लेना चाहिए, जिससे हानि न हो। जहाँ पर बाजार पास हो वहाँ फलो को वृक्ष पर पकने पर भी तोड़ा जा सकता है। जहाँ पर दूर हो वहाँ पर फलों का पूरी तरह से पकने के पहले तोड़ लेना चाहिए जिससे अच्छी अवस्था में बाजार ले जाया जा सके परन्तु कच्चे फल नहीं तोड़ने चाहिए।

उपयोग: अधिकतर नैक्ट्रिन के ताजे फल ही खा लिए जाते है। नैक्ट्रिन की जिन किस्मों में गुठली गुदे से चिपकी नहीं

परिचयः नैक्ट्रिन, सेब सा दिखने वाला स्वाद में आडू व प्लम जैसा एक लाजवाब फल है यह विदेशी प्रजाति का एक फल है। इसका वैज्ञानिक नाम Prunus persica var. nucipersica है। शीतोष्ण तथा समशीतोष्ण कटिबंधीय फलों में नैक्ट्रिन का महत्वपूर्ण स्थान है। यह आडू एवं प्लम की प्रजाति से तैयार एक फल है यह आडू के ही समुदाय का फल है, तथा इसके अधिकतर ताजे फल ही खा लिए जाते हैं।

पोषक तत्वों की मात्राः नैक्ट्रिन का फल दिखने में सेब व स्वाद में आडू व प्लम जैसा रसीला होता है। इसके प्रति 100 ग्राम फलो में 44 किलो कैलारी ऊर्जा, 1055 ग्राम प्रोटीन, 32 ग्राम वसा, रेशे 1.78 ग्राम, पोटेशियम 190 मिग्रा विटामिन ए व विटामिन सी प्रचुर मात्रा में पाए जाते है। यह सेहत के लिए आडू व पूलम से कहीं अधिक लाभदायक साबित होता है ।

प्रजातियाँः भारत में नेक्ट्रिन की स्नोक्वीन, अन्नाक्वीन, चरोकी, लेट ले ग्रांड, नेक्टारेड, सनग्रांड, सनलाइट, सनराइज व सनराइप पाई जाती है ।

जलवायुः नैक्ट्रिन की खेती आडू की तरह ही गरम घाटियों में भी की जा सकती है। इसको जाड़ो में अधिक ठंडक की आवश्यकता होती है परन्तु अधिक पाला और ओले से विशेषकर फूलने तथा फल लगने के समय इसको क्षति भी पहुँचती है। समुद्रतल से 800–1600 मीटर की ऊँचाई तक आसानी से पनपने वाला यह पौधा तीन साल बाद फल देना शुरू करता है। इसमे जनवरी व फरवरी में फूल आते है। मई अन्त व जून में फल तैयार हो जाता है। यानि यह आम व सेब से पहले ही पक कर तैयार हो जाता है। यह निचले इलाको के साथ ही ऊँचे इलाको के किसानो के लिए समान रूप से लाभकारी है। इसकी किस्मों का चुनाव करते समय विशेष स्थान की जलवायु (ऊँचाई तथा वर्षा) का ध्यान रखना आवश्यक होता है वर्ना फलत अच्छी नहीं मिलती है।

भूमि का चयनः यह विभिन्न प्रकार की मिटट्री में उगाया जा सकता है, परन्तु अच्छे जल निकास वाली बलुई दुमट मिटटी इसके लिए सर्वोत्तम होती है। इसकी खेती उपजाऊ कंकरीली तथा चिकनी दुमट मिटटी में भी सफलता पूर्वक की जा सकती है, परन्तु ऐसे स्थानों में भी जलनिकास का समुचित साधन होना चाहिए ।

पौंध प्रसारणः नेक्ट्रिन का प्रसारण साधारणतया कलिकायन (चश्मा) व कलम बाँधकर किया जाता है। इसके लिए खुबानी, अलूचा व आडू के बीजू पौधे स्कंध रूप में प्रयोग किये जाते हैं परन्तु आडू का स्कंध सर्वोत्तम सिद्व हुआ है एवं अधिकतर व्यावसायिक किस्में आडू के ही स्कंध पर चश्मा द्वारा तैयार की जाती है। बीजू पौधे सरलता पूर्वक तैयार किया जाते हैं बीजों को रोपणी में 6.0–10 सेंटीमीटर की दूरी पर लोहे के किसी उपकरण अथवा खुरपी से 5.0–7.5 सेंटी मीटर की गहरी नाली बनाकर 7.5– 10.0 सेंटी मीटर की दूरी पर (बीज से बीज की दूरी) बो दिया जाता है तथा लगभग 5.0 सेंटी मीटर मिटटी की तह से ढक दिया जाता है। बीजों को अच्छी तरह खाद मिलाकर तैयार की हुई रोपणी में बोना चाहिए जिससे अगस्त तक बीजू पौधे लगभग 60–75 सेंटी मीटर की ऊँचाई तक हो जाये जिसमें उनमें कलिकायन (चश्मा अथवा बडिंग) सफलता पूर्वक की जा सके।

रोपणः सर्वप्रथम भूमि की खुदाई कर के उसे अच्छी तरह पौधे लगाने के योग्य बना लेना चाहिए। जहाँ पर नैक्ट्रिन के पौधे लगाने हो वहाँ से वृक्षों की जड़ो तथा अन्य झाड़ियों को साफ कर देना चाहिए, इस बात को ध्यान में रखते हुए भूमि तैयार करनी चाहिए की वह एक तरफ से ढालू हो ताकि पानी आसानी से निकल जाये।

गड्ढे बनानाः नैक्ट्रिन के लिए 5 x 5 मीटर की दूरी पर 0.9 x 0.9 ग 0.9 मीटर के गड्ढे खोदने चाहिए। वर्षा के पहिले इन गडढों को मिटटी तथा कम्पोस्ट या गोबर की सड़ी खाद से (70–75 किलोग्राम प्रति गड्ढे के हिसाब से) भरकर गड्ढों को अच्छी तरह से बंद कर देना चाहिए तथा इन्हें भूमि की सतह से 30 सेमी ऊपर तक भरना चाहिए।

रोपाईः नैक्ट्रिन के पौंधो की रोपाई जाड़ों में मध्य दिसम्बर से मध्य फरवरी तक सुप्तावस्था में किसी समय कर सकते हैं। परन्तु बसंतऋतु के आरंभ में पौधा लगाना सर्वोत्तम होता है। पौधे लगाने के बाद 0.80 से 0.90 मीटर की ऊँचाई पर छटाई कर देनी चाहिए। इसकी जड़ों का फैलाव पौधे के ऊपर सिरे की बढ़वार से करीब दुगुना होता है। अतः इसकी जड़ो के अच्छे फैलाव के लिए यह आवश्यक है कि वहाँ पर ऐसे पौधे या झाड़ी न हों, जिनसे जड़ों के फैलने में बाधा हो।

खाद तथा उर्वरकः नैक्ट्रिन की फलत पर पौधे की बढ़वार का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है पौधे का विकास एवं प्रकृति का प्रभाव फलों के आकार रंग व गुणों पर भी पड़ता है अच्छी बढवार व फलत के लिए काफी मात्रा में जैविक खादों की आवश्यकता होती है। पहले वर्ष में खाद देने की आवश्यकता नहीं होती है। दूसरे वर्ष में 15–20 कुन्तल गोबर की खाद प्रति एकड़ तथा पौधे के प्रति वर्ष आयु के हिसाब से प्रति पौधा 20 ग्राम नाईट्रोजन 15 ग्राम फास्फोरस तथा 15 ग्राम पोटाश प्रति वर्ष आयु के हिसाब से दी जा सकती है।